اٰیاتُها ٥ ﴿١٠٥ سُوْرَةُ الفِيلِ مَكِّيَّةٌ ١٩﴾ رکوعها ١

सूरए फ़ील मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِيۡلِ ﴿١﴾ اَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِىۡ

ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया[2] क्या उन का दाउं तबाही

تَضۡلِيۡلٍ ﴿٢﴾ وَّاَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا اَبَابِيۡلَ ﴿٣﴾ تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ

में न डाला और उन पर परिन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं[3] कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से

مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ ﴿٥﴾ ع

मारते[4] तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)[5]

اٰیاتُها ٤ ﴿١٠٦ سُوْرَةُ قُرَيۡشٍ مَكِّيَّةٌ ٢٩﴾ رکوعها ١

सूरए कुरैश मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

दरवाज़े बन्द कर के आतिशीं सुतूनों से उन के हाथ पाउं बांध दिये जाएंगे। **1 :** "सूरतुल फ़ील" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, छियानवे हर्फ़ हैं। **2 :** हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है। अब्रहा यमन और हब्शा का बादशाह था, उस ने सन्आ़ में एक कनीसा (यहूदो नसारा का इबादत ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि ह़ज करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के यहीं आएं और इसी कनीसा का त़वाफ़ करें, अ़रब के लोगों को येह बात बहुत शाक़ थी, क़बीलए बनी किनाना के एक शख़्स ने मौक़अ़ पा कर उस कनीसा में क़ज़ाए ह़ाजत की और उस को नजासत से आलूदा कर दिया, इस पर अब्रहा को बहुत त़ैश आया और उस ने का'बे को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर जिस में बहुत से हाथी थे और उन का "पेशरव" एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा कोह पैकर हाथी था जिस का नाम मह़मूद था। अब्रहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर अहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये, उन में दो सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्तलिब के भी थे, अ़ब्दुल मुत्तलिब अब्रहा के पास आए थे बहुत जसीम व बा शकोह अब्रहा ने उन की ता'ज़ीम की और अपने पास बिठाया और मत़लब दरयाफ़्त किया। आप ने फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि मेरे ऊंट वापस किये जाएं। अब्रहा ने कहा : मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए का'बा को ढाने के लिये आया हूं और वोह तुम्हारा तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम मक़ाम है ! तुम उस के लिये तो कुछ नहीं कहते अपने ऊंटों के लिये कहते हो ! आप ने फ़रमाया : मैं ऊंटों ही का मालिक हूं उन्ही के लिये कहता हूं और का'बे का जो मालिक है वोह ख़ुद उस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। अब्रहा ने आप के ऊंट वापस कर दिये, अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कुरैश को ह़ाल सुनाया और उन्हें मश्वरा दिया कि वोह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाह गुज़ीन हों। चुनान्चे कुरैश ने ऐसा ही किया और अ़ब्दुल मुत्तलिब ने दरवाज़ए का'बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में का'बे की हिफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप अपनी क़ौम की त़रफ़ चले गए। अब्रहा ने सुब्ह़ तड़के अपने लश्करों को तय्यारी का हुक्म दिया और हाथियों को तय्यार किया लेकिन मह़मूद हाथी न उठा और का'बे की त़रफ़ न चला, जिस त़रफ़ चलाते थे चलता था, जब का'बे की त़रफ़ उस का रुख़ करते थे बैठ जाता था। **अल्लाह** तआ़ला ने छोटे छोटे परिन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े (पथ्थर) गिराते थे जिन से वोह हलाक हो जाते थे। **3 :** जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज आई, हर एक के पास तीन कंकरियां थीं, दो दोनों पाउं में एक मिन्क़ार (चोंच) में। **4 :** जिस पर वोह परिन्द संगरेज़ा छोड़ते वोह संगरेज़ा उस के ख़ोद (जंगी टोपी) को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में गुज़र कर ज़मीन में पहुंचता, हर संगरेज़े पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़े से हलाक किया गया। **5 :** जिस साल येह वाक़िआ़ हुवा उसी साल इस वाक़िए के पचास रोज़ बा'द सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की विलादत हुई।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ﴿۲﴾ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ

इस लिये कि क़ुरैश को मैल दिलाया उन के जाड़े और गरमी दोनों के कूच में मैल दिलाया (रग़बत दिलाई)[2] तो उन्हें चाहिये इस घर

هٰذَا الْبَيْتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۵ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾ ع ١ ٣١

के[3] रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में[4] खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा[5]

اٰياتها ٧ | ١٠٧ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ ١٧ | ركوعها ١

सूरए माऊ़न मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ﴿۲﴾

भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है[2] फिर वोह वोह है जो यतीम को धक्के देता है[3]

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ

और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता[4] तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से

1 : "सूरतुल क़ुरैश" बक़ौले असह्ह मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार आयतें, सतरह कलिमे, तिहत्तर हर्फ़ हैं। 2 : या'नी अल्लाह तआ़ला की ने'मतें बे शुमार हैं, उन में से एक ने'मते ज़ाहिरा येह है कि उस ने क़ुरैश को हर साल में दो सफ़रों की त़रफ़ रग़बत दिलाई, उन की मह़ब्बत उन में डाली, जाड़े के मौसिम में यमन का सफ़र और गरमी के मौसिम में शाम का कि क़ुरैश तिजारत के लिये इन मौसिमों में येह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग इन्हें अहले ह़रम कहते थे और इन की इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत करते थे। येह अम्न के साथ तिजारतें करते और फ़ाएदे उठाते और मक्कए मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिये सरमाया बहम पहुंचाते, जहां न खेती है न और अस्बाबे मआ़श, अल्लाह तआ़ला की येह ने'मत ज़ाहिर है और इस से फ़ाएदा उठाते हैं। 3 : या'नी का'बए शरीफ़ा के 4 : जिस में इन सफ़रों से पहले अपने वत़न में खेती न होने के बाइ़स मुब्तला थे, इन सफ़रों के ज़रीए से 5 : ब सबब ह़रम शरीफ़ के और ब सबब अहले मक्का होने के कि कोई उन से तअ़र्रुज़ नहीं करता बा वुजूदे कि अत़राफ़ो ह़वाली (आस पास के अ़लाक़ों) में क़त्लो ग़ारत होते रहते हैं, क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं या येह मा'ना हैं कि उन्हें जुज़ाम से अम्न दी कि उन के शह्र में उन्हें कभी जुज़ाम न होगा या येह मुराद कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बरकत से उन्हें ख़ौफ़े अ़ज़ीम से अमान अ़त़ा फ़रमाई। 1 : "सूरतुल माऊ़न" मक्किय्या है और येह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई, आ़स बिन वाइल के बारे में, और निस्फ़ मदीनए त़य्यिबा में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में। इस में एक रुकूअ़, सात आयतें, पच्चीस कलिमे, एक सो पच्चीस ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है बा वुजूद दलाइल वाज़ेह़ होने के। **शाने नुज़ूल :** येह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुईं। 3 : और उस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उस का ह़क़ नहीं देता। 4 : या'नी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है, इन्तिहा दरजे का बख़ील है।

www.dawateislami.net